Research Papers

वैज्ञानिक द्रष्टीकोण से पुराण पर एक विचार

पंडया विजयकुमार प्रकाशचंन्द्र
मुलाकाती अध्यापक
आदिवासी कला एवं वाणिज्य
कोलेज, भिलोडा

प्रस्तावना :–

सर्गश्य प्रतिसर्गश्य वंशो मन्वन्तराणि च ।
वंशानुचरितश्चैव पुराणं पश्व लक्षणम्।।
(विष्णु पू, ३, ६, २८)
सृष्टी-प्रवृति-संहार-धर्म-मोक्षप्रयोजनम्।
ब्रह्मभिर्विविधैः प्राकतं पुराणं पश्चलक्षणम्।।
(कौटिल्य अर्थशास्त्र, जय मंगला टीका १, ५)

उत्पतिं प्रलयं यैव वंशान्मन्वन्तराणि च ।
वंशानुचरितम्श्चैव भुवनस्य च विस्तरम्।।
(मत्स्य पू-अध्याय २, २२)

प्रस्तुत श्लोक पुराण के लक्षणोको प्रतिपादित करते है। इन सभि श्लोको का अर्थ यहि है कि "सृष्टी कि शरुआत ओर उसका अंन्त ओर इन दोनो के बिचमे संसार में कैसे-कैसे लोग आये ओर उन्होने क्या-क्या किया उसकि कथा या जानकारी जिसमे है। वह पुराण है।7

Puran as a source of literature and science (Shastras) हम Science को स्हासतरास कहते है। परंतु यह सर्वथा उचित नहि है। हम पुराण को सायन्स कि परिभाषाँ में भी सिध्ध कर सकते है। हम Science को Shatras कह देते है वहि संस्कृत पर गलत-सलत बोलने वालोको मोकां मिल जाता है। हमे सायन्स को सायन्स रखते हुए हि पुराण को सिध्ध करना होगा। तभी हम पुराणो को उचित न्याय दिला पायेंगे उपर्युक्त श्लोकों और भावार्थो के अनुसार यह बाते सामने आती है :-

(१) सृष्टी कि उत्पति के बारे में स्बसे पहेले व्यवस्थित ढंग से (तरिके से) पुराणो मे बताया गया है।

(२) सृष्टी कि उत्पति के साथ हि उसके प्रलय के बारे में भी सोचने वाला ग्रंथ (गर हम वैज्ञानिक तरिके से इसे सोचे तो हमे भविष्य में आनेवाली आपदा की जानकारी मिल सकती है।)

(३) हम 'वंश' ओर 'वंशानुचरितम्' से जान सकते है कि वो लोग कैसे थे ? क्या करते थे ? आदि (पर वैज्ञानिक तरिके से)

(४)हमें यह बात भी भूलनी नहि चाहिए की सभी पुराण किसी ना किसी देव (भगवान) की स्तुती कर्ता कभी-कभी अपनी आपा खो देता है। ओर ज्यादा

लिख देता हैं। इस लिये पुराणों कि अतिशयोक्ति को नजर अंदाज करते हुए हमे सोचना होगा।

(५)'पुरा नवं भवति'- अर्थात "जो पुरानी बातको नईकरता है। इसी तरह पुराणो को हमें तत्कालिन समाज ओर वैज्ञानिक तरिके से सोच कर समझाना होगा।

पुराणो के अवतारोके बारे मे सोचे तो हमे जानने मिलेगा के यह "अवतार" हवाँ मे उडाने वाली वात जैसे नहि वह वैज्ञानिक दृष्टि से सत्य सिध्ध कर सकते है।

अवतारो के बारे मे गीता में यह कहा गया है। :-

(१)"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
(श्रीमद् भ,गीता अ-८,७)

(२)अथ देवो महादेवः पूर्व कृष्णः प्रजापतिः।
विहारार्थ स देवेशो मानुषेष्विह जायते।।
(मत्स्य पू अ-८७,२)

(३) परमेष्ठी त्वयां मध्ये तथा सन्नामवेदयगाम्।
क्थमेनां समुन्नेष्य इति दध्यौ धिया चिरम्।।
(भा पू तृतियस्कंध २३ अ ११श्लोक)

भावार्थ :-

(१)जब-जबधर्म को हानी ओर अधर्म का बढावा होता है।
तब-तब मे स्वयं अवतरित होता हु।

(२)पुराने वख्तमें जे प्रजा के स्वामी थे वो देवाधी देव भगवान
श्री कृष्ण मृत्युलोक मे लिला करने के लिये मानव योनि मे अवतरीत हुए।

(३)फिर ब्रह्माजिने जल मे डुबी हुइ पृथ्वि को देखा
उसे किस तरह बहार निकालु?
उसका कइ समय तक बुध्धिपुर्वक शोचने लगे।

इस समस्त भावार्थो से एक बात सर्वमान्य है कि जब समाज,सृष्टि,मानव सभी विकट परिस्थिती में होते है। तब एक नया विचार नये युग कि शुरुआत होती है। उसी को अवतार कहते है।

डार्विन का उत्क्रान्तीवाद यह कहता है कि सबसे पहेले जिवन पानि में हुआ फिर वानर में से मानव वो भि आदिमानव ओर धिरे-धिरे हम यहा तक आये है।

पुराण भि अपने अवतारो में यहि बताता है। मत्स्य,कूर्म,वराह का संबंध पानि के साथ है। वो वानर कि बात करते है हम शेर है इसलिये नरसिंह अवतार फिर 'वामन' और परशुराम दोनो का संबंध जंगल के साथ है इसलिए यह भि सिध्ध होता है आज से पहेलेका समय रामकथा और अभि का समय और समाज कृष्ण अवतार जैसा है वह सिध्ध करना इतना मुश्किल नहि है आने वाला समय 'बुध्ध' के समय जैसा होगा ऐसा लगता है क्योकी आज लोग परमशांति की तरफ मुडे है।

इस तरह पुराण एक सायन्स है और उसका व्यवस्थित विश्लेशन करने से सायन्स को काफी मदद मिलेगी।